IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बुन्देलखंड की 'वीरांगना झलकारी बाई' की शौर्य गाथा

बृजेन्द्र सिंह यादव
सहायक प्राध्यापक
एवं शोधार्थी हिन्दी
शासकीय महाविद्यालय लिधौरा
जिला–टीकमगढ़ मध्यप्रदेश

डॉ. पायल लिल्हारे
विभागाध्यक्ष
एवं शोध निर्देशक हिन्दी
अ.श.च.आ.शास.स्नात.महाविद्यालय
निवाड़ी मध्यप्रदेश

भारत को स्वतंत्र कराने के लिये अनेक वीर और वीरांगनाओं ने अपना सर्वस्व बलिदान दिया है। बुन्देलखंड क्षेत्र के महान स्वतंत्रता नायक–नायिकाओं ने भी राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्रसेवा में अपने प्राणों की आहुति दी हैं। 1857ई0 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की मुख्य क्रांतिनायक झांसी की रानी महारानी लक्ष्मीबाई की सबसे प्रिय सहेली तथा अमर वीरांगना झलकारी बाई, भी उन्हीं में से एक है। इनके संबंध में लिखने से प्रारंभ में इतिहासकार एवं साहित्यकार मौन रहें। बुन्देली जनमानस में इनकी मान्यता एवं राष्ट्र के प्रति इनका अमूल्य योगदान होने से इनकी वीरता, समाज में आज भी प्रदर्शित हो रही है।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने झलकारी बाई के संबंध में लिखा है:–

जा कर रण में ललकारी थी,
वह तो झाँसी की झलकारी थी।।

झाँसी जिले के भोजला नामक छोटे से गाँव में एक साधारण व गरीब दलित परिवार में 22 नवम्बर 1830ई0 को प्रातः झलकारी का जन्म हुआ था। इनके पिता मूलचन्द्र जिन्हें ग्रामवासी सदोवा कहते थे बहुत ही सज्जन थे। झलकारी की माँ जमुना (धनियां) भी निडर महिला थी। लाड़ली बिटिया झलकारी इनकी एकमात्र संतान थी। इनके जन्म होने पर वे बेहद प्रसन्न थे। बाल्यावस्था में माँ के निधन के कारण झलकारी घर के कामों में अपने पिताजी का सहयोग करती थी। बचपन से ही झलकारी, गुणवान, पक्के इरादो वाली, लगनशील एवं तेजमय मुखवाली थी। बचपन में झलकारी अपने पिताजी से महान वीरों की गाथाओं को सुनती रहती थी जिससे वह निडर हो गई थीं।

जंगल में जलाऊ लकड़ी काटते समय अचानक बाघ आ जाने पर अकेले ही निडर होकर बाघ को कुल्हाड़ी से मारना, उनके अद्भुत साहस, एवं वीरता को प्रदर्शित करता है। झलकारी की बहादुरी से भोजला गाँव में एक सेठ के घर धन लूटने आये डाकुओं को गाँव वालो ने सफल नहीं होने दिया था। ''झलकारी की वीरता, निडरता और चतुराई, साहस की चर्चा हर जुबान पर थी और धीरे–धीरे इन चर्चाओं की खबर झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई तक किले में पहुँच गई।''[1]

''एक बाबा, झलकारी से खुश होकर उनके पिता सदोवा से कहते हैं कि तुम्हारी बेटी बहुत बहादुर हैं। देखना एक दिन इतिहास में इसका नाम होगा। झाँसी के दरबार में इसका आना–जाना होगा।''[2] अशिक्षित झलकारी का विवाह 13 वर्ष की बाल्यावस्था में नयेपुरा उन्नाव दरवाजा झाँसी के निवासी एवं पहलवानी में रूचि रखने वाले जतारिया गोत्र वाले पूरन कोरी से होता है। ससुराल में झलकारी एक आदर्श बहु बनकर घर का प्रत्येक काम स्वयं खुशी से करती थीं जैसे आटा पीसना, पानी भरना, घर की सफाई, खाना बनाना एवं कपड़े बुनना आदि कार्य उनकी दिनचर्या में सम्मिलित थे। ससुराल में सभी जन इनसे बहुत प्रसन्न थे।

झांसी की रानी, महारानी लक्ष्मीबाई ने झलकारी सहित सभी स्त्रियों को अपने राजमहल में गौरी पूजन एवं हल्दी कुमकुम त्यौहार में सम्मिलित होने के लिए निमंत्रण भेजा। इसकी सूचना मिलने पर झलकारी की ससुराल वाले बहुत प्रसन्न थे। पति पूरन कहता था। ''हमाई रानी साब ने हमाई घरवारी खों गौर पूजन में बुलावा भेज के हमाओ जनम सफल कर दओ, हमाय तो भाग ही खुल गयें''।[3]

पति एवं सास से आज्ञा लेकर नववधू झलकारी, श्रृंगार करके रानी महल में रानी लक्ष्मीबाई से मिलकर प्रणाम करती है और उन्हें माला पहनाती है। रानी, झलकारी से उनके पति का नाम, जाति एवं उनके काम के संबंध में पूँछती हैं। पति का नाम झलकारी सीधे तौर पर पूरन न बताकर कहती हैं कि चन्द्रमा पूरन मासी को ही पूरा दिखता है इस तरह झलकारी ने भारतीय संस्कृति में पत्नी द्वारा पति का नाम न बताने की परम्परा का सफल निर्वहन किया है। रानी समझ जाती है कि इनके पति का नाम पूरन है। झलकारी सभी प्रश्नों का उत्तर बड़ी निडरता से बताती है। धैर्यवान रानी ने उसके किसी भी उत्तर का बुरा नहीं माना। लक्ष्मीबाई ने कहा कि तुम भी कुश्ती मलखंभ, तलवारबाजी आदि सीखने के लिये, महल आना। रानी बड़े हर्ष से सभी महिलाओं से झलकारी की वीरता की प्रसंश करते हुए कहती है ''काश ऐसी ही यहाँ की प्रत्येक नारी हो जाये तो झाँसी की ओर दुश्मन कभी आँख उठाने की हिम्मत न करें।''[4]

झलकारी के मन में देशप्रेम जगाने पर झलकारी ने रानी से कुश्ती, मलखंभ, तलवार चलाना आदि सीखने के बाद वह अकेले में इनका अभ्यास करने लगी। यह देखकर समाज एवं गाँव के लोग झलकारी एवं पूरन के बारे में व्यंग्य करते थे। लेकिन दोनों ने देशसेवा के लिए इन व्यंग्यों की कभी भी जीवन में परवाह नहीं की थी। झलकारी के बचपन के गाँव के मित्र चन्ना और रमजी झाँसी घूमते हुये झलकारी के घर आते हैं तो अपने साथियों को पहचानकर उनका आत्मिक सत्कार करके अपने पिता एवं गाँव से प्रेम होने के कारण गाँव की सभी घटनाएँ पूँछती हैं।

झलकारी अपने घर से 3 कि.मी. दूर उन्नाव से उत्तर दिशा में स्थित अंजनी माता के मंदिर के पास, कम आवागमन होने से वही स्थित अंजनी पहाड़ियाँ पर जाकर प्रतिदिन निशानेबाजी का अभ्यास करती थीं।एक दिन कपकपाती ठंड में चारों ओर कुहरा था। झलकारी से उस दिन अभ्यास करते समय कुहरे के कारण स्पष्ट न दिखाई देने से धोखे से एक गाय को गोली लग जाती है। झलकारी वहाँ जाकर देखती है तो खाई होने से वहां कुछ दिखाई नहीं देता है। घर आकर वह पति पूरन को सविस्तार घटना बताती है। पूरन, अंजनी टौरिया जाकर देखता है तो उसे कोई जानवर नहीं मिला। वास्तव में एक ब्राम्हण ने उस गाय को दतिया में पहुँचा दिया जिससे वह किसी को नहीं मिल सकें। पूरन को यह सब पता चल गया था कि यह कार्य मुझे एवं झलकारी को बदनाम करने के लिये किया गया है। चारों तरफ यह खबर फैल गई कि झलकारी ने गाय की हत्या कर दी है तो समाज में उसे अपशब्द सुनाये एवं उसे सार्वजनिक रूप से बंद कर दिया।

पंचायत के व्यक्तियों द्वारा विशाल पंचायत बुलाई गई जिसमें कई आस–पास गाँवों के पंच एवं विशेषजन उपस्थित हुए। भूखे, प्यासे पूरन ने कहा कि हम निर्दोष हैं, मेरे पास साक्ष्य नहीं है लेकिन गाय, झलकारी के द्वारा चलाई गई गोली से नही मरी है। किसी के सामने न झुकने वाले झलकारी व पूरन पंचायत के सामने सिर झुकाये एवं उदास बैठे हैं। पंचायत ने सबके तर्क सुनने के बाद निर्णय लिया कि दोषी पूरन व झलकारी कल तक झांसी छोड़ दे और फिर कभी यहाँ वापस न आये। ये दोनों जाति से बहिष्कृत भी किये जाते हैं। यह सुनकर झलकारी अचेत पूरन को घर लिवा जाती है। झलकारी के द्वारा समझाने पर पूरन, लक्ष्मी जी के मंदिर हलवाईपुरा में दर्शन को आई हुई महारानी लक्ष्मीबाई को पूर्ण विवरण के साथ घटना बताता है। रानी द्वारा उस पंडित को बुलाने पर एवं कड़ाई से पूछताछ करने पर पंडित सब कुछ सही–सही बता देता है कि झलकारी निर्दोष है। सबकी विनती करने से लक्ष्मीबाई ने उस पंडित को क्षमा कर दिया। बाद में पूरन को कर्ज लेकर सत्यनारायण भगवान की कथा कराकर एक ब्राम्हण भोज कराना पड़ा। संकट में सामाजिक अन्याय के खिलाफ लड़ने वाली झलकारी का किसी ने साथ नहीं दिया।

एकता और सामंजस्य की पहचान हल्दी कुमकुम के उत्सव को आमजन तक पहुंचाने का श्रेय रानी लक्ष्मीबाई को है। रानी के विशेष बुलाने पर झलकारी राजमहल आती है तो उत्सव के बाद रानी उससे कहती है कि ''अंग्रेजो की आँखें हमारी झाँसी पर लगी हैं। अब वह दिन दूर नहीं जब हम सबको एक साथ में युद्ध क्षेत्र में उतरना पड़ेगा।''[5] देशभक्त झलकारी अपूर्व उत्साह में कहती है महारानी, आप चिंता न करे, हम आपके लिये अपना सर्वस्व बलिदान दे देगें। झाँसी की रानी की देखरेख एवं निर्देशन में, अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए झलकारी सहित सुन्दर, मुन्दर, काशीबाई सभी सहेलियाँ कड़ा अभ्यास करती है।

झांसी के राजा गंगाधर राव का 21 नवम्बर 1853ई0 को निधन होने से महारानी लक्ष्मीबाई को कम आयु (18 वर्ष) में बहुत बड़ा आघात लगा। उनके दत्तक पुत्र दामोदर राव को अंग्रेजों ने उत्तराधिकारी नहीं माना और झाँसी को अंग्रेजी शासन में मिलाने का घोषणा पत्र 13 मार्च 1854ई0 को अंग्रेज अधिकारी एलिस मालकम ने झाँसी के दरबार में पढ़कर सुनाया, तो रानी लक्ष्मीबाई कहती है ''मैं उस परवाने को कतई नहीं मानती, मैं अपनी झाँसी किसी भी शर्त पर न दूँगी।[6] रानी अपने राज्य की प्रत्येक जानकारी हमेशा रखती थी और हमेशा प्रजा के सुख–दुःख में शामिल रहती थीं। रानी ने सभी जाति एवं सभी उम्र के व्यक्तियों को सेना में शामिल होने के लिए रास्ते खोल दियें। नागरिक अपनी जिम्मेदारी स्वयं समझकर कई

गाँवों से आकर सेना में शामिल हो रहे थे। रानी लक्ष्मीबाई ने झलकारी को महिलाओं की सेना 'दुर्गा' का सेनानायक, सलाहकार तथा विश्वासपात्र सहायक एवं उनके पति पूरन कोरी को तोपची बना दिया।

जनरल ह्यूरोज ने झाँसी पर आक्रमण किया तो रानी लक्ष्मीबाई के उत्साहवर्धन से भाऊवख्शी, गौस खान, खुदाबख्श, जवाहरसिंह, रघुनाथसिंह, झलकारी बाई और पूरन जैसे वीरों से सजी सेना ने ह्यूरोज को सफल नहीं होने दिया। अंग्रेज हार गये और किलें में प्रवेश नहीं कर पायें। तात्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई की सहायता के लिये बीस हजार सेना लेकर आ रहे थें लेकिन ह्यूरोज द्वारा उन पर अचानक आक्रमण कर देने से एवं तात्या टोपे के तैयार न होने के कारण वह हार कर कोंच होते हुए काल्पी चले गये। धीरता एवं वीरता का संगम लिये झलकारी युद्ध जैसी कठिन परिस्थिति में भी अद्भुत संतुलन एवं समन्वय रखती थीं। अंग्रेजी साम्राज्य का विरोध करती हुई बुर्ज से नीचे आकर झलकारी महिलाओं को इकट्ठा करके कहती है ''बहिनों अब गोरे भीतर आवे की फिराक में हैं हमाई दीवार से चढ़के घरन–घरन में घुस जेंहें, हमाई इज्जत, आबरू मट्टी में मिल जेहे। आज साबित कर दो के बुन्देलखंड की एक नारी ने अपनी जान की बाजी लगा कें झाँसी की रक्षा करी हैं''।[7]

अंग्रेजों के लालच में आकर दुल्हाजू ने ओरछा फाटक खोल दिया जिससे अंग्रेज सेना झाँसी में प्रवेश कर गई और नगर में कुहराम मच गया। रानी ने अपने सभी साथियों से कहा कि अंग्रेजी सेना को बाहर निकालना है। स्वयं रानी लक्ष्मीबाई ने अपने सैनिकों के साथ अंग्रेजी सेना को नष्ट–भ्रष्ट कर दिया था। वीरांगना झलकारी बाई ने एक महिला का दूसरी महिला के प्रति क्या कर्त्तव्य होता है हम सभी के सम्मुख प्रदर्शित किया है। उन्हें स्वयं अपने जीवन से ज्यादा रानी लक्ष्मीबाई के मान–सम्मान एवं जीवन की चिंता दी। भांडेर एवं उन्नाव दरवाजा को वह अकेली ही सुरक्षित रखें हुई थीं। वह कहती थी ''आज बताउनैं कि बुन्देलन की जनी परान दै के झाँसी के रच्छा कर है।''[8]

04 अप्रैल 1858ई0 को रात्रि में रानी लक्ष्मीबाई पुत्र को सफेद घोड़े सारंगी पर बिठाकर झाँसी एवं किले को प्रणाम करके भांडेर दरवाजे से निकल जाती है। झलकारी बाई के प्रेरक विचारों को सुनकर एवं उससे प्रभावित होकर उसका पति पूरन कहता है कि ''मैं संसार को बता दूँगा कि झांसी की माटी में कितनी जान है कि उसके आगे दुनियाँ का कोई योद्धा नहीं टिक सकता।''[9] तोपची पति पूरन किले की रक्षा करते हुये 6 जून 1857ई0 को शहीद हो गये। झलकारी बाई का चेहरा रानी लक्ष्मीबाई से बहुत मिलता–जुलता था। निःसंतान झलकारीबाई 5 अप्रैल 1858ई0 को रानी जैसी वेशभूषा पहनकर अंग्रेज छावनी पहुंच गई। वहाँ अंग्रेज इन्हें रानी लक्ष्मीबाई समझकर प्रसन्न हो गये। झलकारी उन्हें बातों में उलझाकर रानी को अतिरिक्त समय देकर उन्हें काल्पी तक पहुँचाने में मदद कर रही थी। गद्दार दुल्हाजू झलकारी को पहचान कर अंग्रेजों को बता देता है कि ''यह रानी नहीं है बल्कि जनरल साहब झलकारी कोरिन है। रानी इस प्रकार सामने नहीं आ सकती।''[10] झलकारी की बहादुरी एवं वीरता से प्रभावित होकर ह्यूरोज ने उन्हें यह कहते हुए छोड़ दिया ''अगर इसी तरह से और भी स्त्रियाँ हो जाय तो हमको हिन्दुस्तान एक दिन में छोड़ देना पडेगा''।[11]

झलकारी बाई के अपने गाँव वापस जाने पर सभी उनका आत्मिक स्वागत करते हैं। गनेश बाबा कहते हैं कि ''दुलईया, आज तूने झाँसी की आन, बुन्देलखण्ड की शान रख ली। मातृभूमि को कलंकित होने से बचा लिया''।[12] झाँसी को अंग्रेजों से आजाद कराना ही उनका आजीवन उद्देश्य रहा था। कुछ इतिहासकार बताते हैं कि 05 अप्रैल 1858ई0 को अग्रेजों से लड़ते हुए झलकारी बाई वीरगति को प्राप्त हुई।

स्वामी भक्ति का अद्भुत परिचय देने वाली एवं अपनी मातृभूमि झाँसी और राष्ट्र रक्षा के लिये बलिदान देने वाली महान वीरांगना झलकारी बाई आज हम सभी भारतवासियों के लिये प्रेरणादायी है। लोकनायिका झलकारीबाई की कर्त्तव्यनिष्ठा, स्वाभिमान, देशप्रेम एवं वीरता को प्रदर्शित करती हुई लोकभूषण पन्ना लाल 'असर' की झलकारी बाई पर लिखी कविता की ये निम्न पंक्तियाँ हैः–

''मुख पे तेज जबर कद काठी, चमत्कार केऊ कर डारे,
झलकारी ने समर बीच में गिन–गिन कें योद्धा मारे.....
दुर्गा सेना की मुखिया सूरत में झाँसी रानी सी,
दुश्मन पे वो टूट परत ती ले तलवार भवानी सी।।''[13]

दलित गरीब परिवारों का मस्तक ऊपर उठाने वाली झलकारी बाई ने आजादी की नींव को मजबूत किया एवं अपनी मातृभूमि की सेवा के लिए सर्वस्व समर्पण किया था। महारानी लक्ष्मीबाई को सुरक्षित कवच प्रदान करने वाली इस वीरांगना की याद में 22 जुलाई 2001ई0 को भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया। वीरांगना झलकारी बाई का सर्वप्रथम साहित्य में सर्वप्रथम उल्लेख डॉ. वृन्दावन लाल वर्मा ने अपने उपन्यास 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' में किया था। इसके बाद 1964ई0

में भवानी शंकर विशारद ने जीवनी के रूप में झलकारी बाई पुस्तक लिखी। मोहनदास नैमिषराय ने 'वीरांगना झलकारी बाई' नामक उपन्यास एवं लोकभूषण पन्नालाल 'असर' ने 'झाँसी रानी–सी झलकारी' नामक उपन्यास इन्हीं पर लिखे है। डॉ. के. एस. भारद्वाज ने 'वीरांगना झलकारी बाई' नामक नाटक लिखा है। 'भोजला की बेटी' बुन्देली महाकाव्य डालचन्द्र अनुरागी द्वारा ने 2010ई0 में इन्हीं पर लिखा हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. लोकभूषण पन्नालाल असर, झाँसी रानी सी झलकारी, यश पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ0 26
2. मोहनदास नैमिषराय, वीरांगना झलकारी बाई, राधाकृष्ण पेपर बैक्स, दिल्ली पृ0 19
3. लोकभूषण पन्नालाल असर, झाँसी रानी सी झलकारी, यश पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ0 32
4. वहीं, पृ0 37
5. मोहनदास नैमिषराय, वीरांगना झलकारी बाई, राधाकृष्ण पैपर बैक्स, दिल्ली पृ0 81
6. वहीं, पृ0 55
7. वहीं, पृ0 61
8. मोहनदास नैमिषराय, वीरांगना झलकारी बाई, राधाकृष्ण पैपर बैक्स, दिल्ली पृ0 93
9. लोकभूषण पन्नालाल असर, झाँसी रानी सी झलकारी, यश पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ0 66
10. वृन्दावनलाल वर्मा, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, मयूर प्रकाशन झाँसी 1995 पृ0 403
11. लोकभूषण पन्नालाल असर, झाँसी रानी सी झलकारी, यश पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ0 74
12. वहीं, पृ0 75
13. वहीं, पृ0 81